

Inhalt

| | |
|-----------------------------------|----|
| Vorwort der Herausgeber | 7 |
| In Ländern und Zeiten | 9 |
| II Korinther 6,1–10 | |
| Vom Beten | 15 |
| Kolosser 4,2–4 (5–6) | |
| Gott als Einbrecher | 21 |
| Jeremia 1,4–10 | |
| Behutsame Mission | 27 |
| I Petrus 3,8–16 | |
| Gott ist Anfänger | 34 |
| Philipper 1,6 | |
| Auf Empfang | 39 |
| Offenbarung 3,1–6 | |
| Evangelium auf Reisen | 45 |
| Apostelgeschichte 16,9–15 | |
| Überraschungen | 51 |
| Psalms 98,1 | |
| Gott in uns | 56 |
| Römer 8,1.2.10.11 | |
| Treue | 61 |
| II Thessalonicher 3,1–5 | |
| Bilder für die Ewigkeit | 67 |
| II Petrus 3,3–13 | |
| Offenes Geheimnis | 74 |
| I Korinther 4,1+2 | |
| Skandalöser Lohn | 78 |
| Matthäus 20,1–16 | |

| | |
|------------------------------------------------------------------------|-----|
| Was die Welt auf den Kopf und die Kirche auf die Füße stellt | 84 |
| Johannes 13,1–15 | |
| Ethik und Schalom | 90 |
| Sacharja 8,16 | |
| Ohnmacht, Macht, Vollmacht | 95 |
| Matthäus 28,16–20 | |
| Gemeinde der „Ausnahmegestalten“ | 101 |
| I Korinther 11,23–26 | |
| Vom Schmecken des Wortes Gottes | 107 |
| Offenbarung 10,8–11 | |
| Mission ohne Missionare | 112 |
| Apostelgeschichte 16,23–34 | |
| Furcht ist nicht in der Liebe | 117 |
| I Johannes 4,16b–21 | |
| Worauf es ankommt | 122 |
| Römer 14,7–9 | |
| Zuhause | 127 |
| Offenbarung 2,17 | |
| Englischer Gruß | 131 |
| Lukas 1,26–38 | |
| Einheit in Christus – Einheit der Christen | 136 |
| Galater 3,26–29 | |
| Frei von allem Durst | 143 |
| Johannes 7,37–39 | |
| Auf dem Weg zur Befreiung | 147 |
| Psalm 98 | |
| Letzte Zeit | 149 |
| Jesaja 2,1–5 | |
| Esoterik für alle | 154 |
| Offenbarung 5,1–14 | |
| | |
| Professor Dr. Hermann Brandt | |
| Lebenslauf und beruflicher Werdegang | 159 |